E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 41-44
Received: 10-04-2020
Accepted: 12-05-2020

डॉ. अशोक कुमार
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़ झारखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अशोक कुमार
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़ झारखंड, भारत

भारत में आधुनिकीकरण के संदर्भ में शिक्षा की भूमिका

डॉ. अशोक कुमार

सारांश
आधुनिक युग विज्ञान और प्रोद्योगीकी का युग है। इस युग में वैज्ञानिकों ने जो खोजें की हैं, जो आविष्कार किये हैं ओर जो शोध किये हैं, उनसे समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन हुये हैं। उनसे मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में भारी बदलाव आया है। कृषि, उद्योग, व्यापार, संचार, चिकित्सा, शिक्षा आदि जीवन के सभी क्षेत्र इससे प्रभावित हुये हैं। इस परिवर्तन को बदलाव को, प्रगति और विकास को स्पष्ट करने के लिये विद्वानों ने आधुनिकीकरण जैसी अवधारणा का प्रयोग किया है। सामान्यतः आधुनिकीकरण की अवधारणा का प्रयोग समाज में होने वाले परिवर्तनों या उद्योगीकरण के कारण पश्चिमी देशों में आये परिवर्तनों या विकासशील देशों में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिये किया गया है। कुछ विद्वानों ने आधुनिकीकरण को एक प्रक्रिया (Process) माना है तो कुछ ने इसे प्रतिफल (Product) के रूप में स्वीकार किया है। देश के आधुनिकीकरण के लिए वहाँ के सभी सामाजिक वर्गों और ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के सभी लोगों को शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। भारत में अब तक बहुत से लोग अशिक्षित हैं। पाठशालाएँ ग्रामीण विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा नहीं प्रदान कर रही हैं जिनमें वे लोग अपने ग्रामों में रहकर ही अपनी उत्तम प्रकार से आमदनी कर सकें। वे लोग शहरों की ओर नौकरी, काम–धन्धे के लिए भागते हैं। अधिकतर पाठशालाओं में उत्तम प्रकार की शिक्षा प्रदान नहीं की जाती जो लोगों में बेरोजगारी और निराशा फैलाना स्वाभाविक ही है। अतः सभी लोगों को उत्तम व आधुनिक प्रकार की प्रभावशाली शिक्षा पाठशाली स्तर पर तो अवश्य ही प्रदान की जानी चाहिए तथा उसके बाद योग्य विद्यार्थियों को एक सही प्रकार से तैयार की गयी जनशक्ति आयोजना (Manpower Planning) के अनुसार तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए ताकि उनमें से कोई भी बेरोजगार न रहे और देश की आवश्यकतानुसार सभी आवश्यक कुशलताओं के विशेषज्ञ मिल सकें जो देश के आधुनिकीकरण के विकास में योगदान दे सकें।

कुटशब्दः आधुनिकीकरण, शिक्षा

प्रस्तावना
आधुनिकीकरण की व्याख्या समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और इतिहासकारों आदि ने अपने–अपने दृष्टिकोण से की है। समाजशास्त्रियों के अनुसार आधुनिकीकरण विभेदीकरण की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम एक समाज को दूसरे समाज से अलग करके देख सकते हैं। अर्थशास्त्रियों के अनुसार आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति नवीन वैज्ञानिक ढ़ंगों का प्रयोग करते हुये उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करता है जिससे वह उनका अधिकतम लाभ उठाते हुये राष्ट्र का आर्थिक विकास कर सकें। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि व्यक्ति में कुछ नया सीखने, कुछ नया करने और नये परिवर्तनों को ग्रहण करने की इच्छा और कर्मशीलता आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को बल प्रदान करती है। इतिहासकारों की दृष्टि से आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अतीत की समीक्षा करके उसके आधार पर नवीन ज्ञान–विज्ञान का प्रयोग करते हुये अपने वर्तमान व भविष्य को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। अतीत की अच्छाइयों और प्रासंगिक बातों को ग्रहण करता है, अप्रसांगिक बातों को छोड़ देता है, रहन–सहन व काम के नये–नये तरीके अपनाता है जिससे आधुनिकीकरण होता है।

आधुनिकीकरण: आधुनिकीकरण निरंतर चलने वाली एक ऐसी जटिल प्रक्रिया है जिसकी व्याख्या विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से है। कुछ विद्वान पश्चिमीकरण को आधुनिकीकरण मानते है। उनके अनुसार यदि कोई समाज पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति को अपना रहा है तो इसका अर्थ यह है कि उसका आधुनिकीकरण हो रहा है। कुछ विद्वानों के अनुसार औद्योगीकरण और नगरीकरण ही आधुनिकीकरण है। औद्योगीकरण में श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण के कारण मशीनों के प्रयोग से उत्पादन बड़े पैमाने पर बहुत बड़ी मात्रा में होने लगा लोगों के गाँवों से नगरों की तरफ आगमन हुआ।

जिससे बड़े–बड़े नगरों का विकास हुआ और उनके जीवन स्तर पर विशेष प्रभाव पड़ा। इस कारण आधुनिकीकरण को औद्योगीकरण और नगरीकरण से जोड़कर देखा जाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार अविकसित और अर्द्धविकसित परंपरावादी समाज को विज्ञान व तकनीकी पर आधारित समाज में बदलने की प्रक्रिया आधुनिकीकरण है।

शिक्षा: शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो चेतन अथवा अचेतन रूप से बालक की व्यक्तिगत रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं तथा सामाजिक आदर्शों को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार स्वतन्त्रता प्रदान करके उसका बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विकास करती है एवं उसके व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करती है कि व्यक्ति तथा समाज दोनों ही उन्नति के शिखर पर चढ़ते रहें।

आधुनिकीकरण की विशेषताऐं

1. आधुनिकीकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा होने वाले परिवर्तन कृषि, उद्योग, राजनीति, समाज व्यवस्था, चिकित्सा, प्रशासन, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में होते हैं।
2. आधुनिकीकरण एक दीर्घकालीन और जटिल प्रक्रिया है। यह एक दिन या एक माह में घटित नहीं होती। यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। जिसका परिणाम होता है – परिवर्तन
3. आधुनिकीकरण एक क्रांतिकारी प्रक्रिया है क्योंकि इसके अंतर्गत बहुत बड़े पैमाने पर परिवर्तन होते हैं जो किसी भी राष्ट्र की सामाजिक संरचना को पूरी तरह से बदल देते हैं।
4. आधुनिकीकरण क्रांतिकारी प्रक्रिया के साथ–साथ विकासवादी प्रक्रिया भी है क्योंकि आधुनिकीकरण को होने में बहुत समय लगता है। यद्यपि विभिन्न समाजों में आधुनिकीकरण की गति अलग होती है, प्रतिमान अलग होते हैं तथापि सभी समाज परंपरा से आधुनिकता की ओर अग्रसर होते हैं।
5. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया गतिशीलता की प्रक्रिया है। जैसे ही किसी समाज में यह प्रक्रिया घटीत होनी प्रारंभ होती है वैसे ही व्यक्तियों के जीवन में मौलिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगते हैं।
6. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अपरिवर्तनीय है। एक बार जब किसी समाज में यह प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है तो उस समाज का फिर अतीत में वापिस लौटना संभव नहीं होती है। औद्योगीकरण नगरीकरण या शिक्षा का विकास होने पर पुरानी स्थिति पर वापिस नहीं किया जा सकता।
7. आधुनिकीकरण की सफलता के लिये कुछ पूर्वापेक्षायें में आवश्यक होती हैं जैसे– यातायात, संचार व संवादवाहन के साधन, ज्ञान–विज्ञान की उन्नत संस्थायें, ऊर्जा के नये स्त्रोत, बैंकिंग व साख की वित्तीय संस्थायें, राष्ट्र की स्वस्थ व सामान्य वातावरण आदि, आदि।
8. आधुनिकीकरण समाज के सामने एक स्पष्ट प्रतिमान होता है। यह प्रतिमान ही उसके लिये प्रेरणा का कार्य करता है और उसके अनुरूप ही समाज अपने को बनाने का प्रयास करता है।
9. आधुनिकीकरण किसी समाज का अंधानुकरण नहीं होता। परंपरागत समाज को उसके प्रतिमान की कार्बन कॉपी नहीं बनाया जा सकता। प्रत्येक समाज को अपनी संस्कृति और अपनी स्थितियों के अनुसार ही उसे अपनाना होता है।
10. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में दीर्घकालीन में उच्चतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिये लघुकालीन संतुष्टि का त्याग करना पड़ता है।
11. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाले नवीन परिवर्तनों को अपनाने के लिये प्रेरित करती है।

शिक्षा आधुनिकीकरण के एक साधन के रूप में

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गतिशील और तीव्र बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। जिन समाजों में शिक्षा की व्यापकता होती है और शिक्षा का उच्च स्तर होता है, उन्हीं समाजों में आधुनिकीकरण अधिक पाया जाता है। भारत में शिक्षा के बढ़ते हुये प्रचार और प्रसार के कारण ही आधुनिकीकरण के मूल्यों, औद्योगीकरण, नगरीकरण, नयी अर्थव्यवस्था, नयी प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक खोजों आदि को बढ़वा मिला है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के तीव्र बनाने में शिक्षा एक साधन के रूप में निम्नलिखित कार्य करती है–

1. **व्यापक दृष्टिकोण का निर्माण:** शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण में व्यापकता लाती है जिससे वह प्राचीन रूढ़ियों, अंधविश्वासों संकीर्णताओं और पूर्वाग्रहों से छोड़कर नवीन और उपयोगी विचारों, आदर्शों और मूल्यों को अपनाने में सफल होता है।
2. **ज्ञान भंडार में वृद्धि:** शिक्षा व्यक्ति का मानसिक और बौद्धिक विकास करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति ने साहित्य, दर्शन, विज्ञान, कृषि, प्रौद्योगिकी, व्यावसायिकता, प्रशासन, चिकित्सा, प्रबंधन आदि से संबंधित ज्ञान के भंडार में वृद्धि होती है और उसका चिंतन तर्कपूर्ण और वैज्ञानिक बनता है।
3. **आर्थिक समृद्धि:** शिक्षा किसी देश की आर्थिक समृद्धि का महत्वपूर्ण साधन हैं इंग्लैण्ड, अमेरिका, जर्मनी, जापान आदि देशों ने जो आर्थिक उन्नति की है, उसका मुख्य कारण वहाँ शिक्षा की उत्तम और व्यापक व्यवस्था है। शिक्षा के द्वारा उत्पादन के नये–नये साधन विकसित होते हैं, प्रबंधन में कुशलता आती है, श्रमिकों की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है और नयी प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है।
4. **विशेषज्ञों का निर्माण:** देश के चहुमुखी विकास के लिये विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योग्यता प्राप्त विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन ह जो ऐसे वैज्ञानिकों, तकनीशियनों, योजनाकारों, प्रबंधकों, इंजीनियरों, चिकित्सकों व शिक्षकों को तैयार करती है जो अपने ज्ञान व कौशल के द्वारा देश में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान करते हैं।
5. **उच्च जीवन स्तर:** आधुनिकीकरण के लिये आवश्यक है कि लोगों का श्रेष्ठ जीवन स्तर हो। जो लोग रोटी, कपड़ा और मकान की चिंता में ही लगे रहेंगे और अपनी न्यूनतम आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये ही प्रयत्नशील रहेंगे, वे आधुनिकीकरण वे विषय में क्या सोच सकेंगे। शिक्षा लोगों को कम आर्थिक व्यय पर अच्छा जीवन व्यतीत करना सिखाती है। शिक्षा लोगों को सीमित साधनों की सहायता से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने की विधियों का ज्ञान कराती है। शिक्षा लोगों को आर्थिक उन्नति, करने के साधन उपलब्ध करने की विधियों का ज्ञान कराती है। शिक्षा लोगों को आर्थिक उन्नति, करने के साधन उपलब्ध कराती है। इस प्रकार शिक्षा लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।
6. **सामाजिक परिवर्तन में सहायक:** आधुनिकीकरण के लिये सामाजिक परिवर्तन आवश्यक है और शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण और सश्क्त साधन है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से शिक्षा दो कार्य करती है एक यथास्थिति की आलोचना अर्थात यह बताना क वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में क्या दोष हैं और उन दोषों को दूर करेन का क्या लाभ होगा। और दूसरा सामाजिक परिवर्तन के लिये प्रयास करना अर्थात् नये परिवर्तनों के लिये भूमिका तैयार करना और उन परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिये लोगों को तैयार करना।
7. **नवीनतम जानकारी प्रदान करने में सहायक:** आज का युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है। आये दिन नई–नई

खोजें और आविष्कार हो रहे हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान के नये द्वारा खुले रहे हैं। तीव्र गति से क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। आधुनिकीकरण के लिये लोगों को इन सबकी जानकारी होना आवश्यक है और यह कार्य शिक्षा ही करती है। श्यामाचरण दुबे के अनुसार– "यह निर्विवाद है कि शिक्षा आधुनिकीकरण का सशक्त साधन हो सकती है। प्रत्यक्षतः उसका लक्ष्य ज्ञानवर्द्धक करना और साथ ही कौशल का विकास करना है और ये दोनों ही आधुनिकीकरण के लक्ष्यों की सिद्धि के लिये आवश्यक है।

8. **परंपरा और आधुनिकता में समन्वय स्थापित करने में सहायक:** समाज में जब भी किसी प्रकार के परिवर्तन होते हैं तो सामाजिक व्यवस्था में असंतुलन आ जाता है। असंतुलन की यह स्थिति लोगों को अस्थिर करती है, उनमें असमंजस्ता पैदा करती है। वस्तुतः यह सोच उचित नहीं है कि जो पुराना है, जो परंपरायें है, वे सब बुरी हैं और जो नया है, आधुनिकता है, वह सब अच्छा है आधुनिकीकरण के लिए यह आवश्यक है कि इन दोनों में समन्य स्थापित किया जाए और यह कार्य शिक्षा के द्वारा किया जाता है। शिक्षा ही परंपरा और आधुनिकता दोनों में सामान्य स्थापित करती है जिससे समाज का आधुनिकीकरण होता है।

भारत में आधुनिकीकरण

सामान्यतः यह माना जाता है कि भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभ अंग्रेजों के शासक काल से प्रारंभ हुआ। अंग्रेजी शासन के परिणामरूवरूप भारत में अनेकानेक परिवर्तन आये। अनेक सामाजिक सुधार आंदोलनों का सूत्रपात हुआ, नयी तकनीकी का आगमन हुआ कृषि, सिंचाई और कुटीर उद्योगों के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन, नये उद्योगों, की स्थापना हुई, यातायात और संचार साधनों का विकास हुआ, सैन्य संगठन, न्यायिक व्यवस्था, सिविल सेवा आदि को व्यवस्थित किया गया, व्यापार की नयी बाजार प्रणाली लागू की गयी, सड़कों का विस्तार हुआ कानून का शासन स्थापित हुआ और नये शिक्षित वर्ग का जन्म हुआ। अंग्रेजों ने भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की नीवं रखी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत आधुनिकीकरण की ओर तेजी से बढ़ा है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में भारत ने यद्यपि पश्चिम से प्रेरणा ली है लेकिन उसने इसका अपना एक अलग और विशिष्ट प्रतिमान अपनाया है। भारतीय संविधान के द्वारा प्रजातंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय और समतावाद की स्थापना की गयी है। प्रजातंत्र का मूल आधार वयस्क मताधिकार है। ग्राम पंचायतों के चुनावों से लेकर लोकसभा के चुनावों तक भारत के करोड़ों लोग अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं। राजनीतिक दल सत्ता प्राप्त करने के लिये प्रतिस्पर्द्धा करते हैं। दिनों–दिन चुनावों में भाग लेने वालों, मत देने वालों और उम्मीदवारों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। पिछड़ी जातियों, अनुसूचित, जातियों, जनजातियों और महिलाओं की राजनीति के क्षेत्र में रुढ़ि बढ़ी है। प्रतिस्पर्द्धा बढ़ी है। जाति, धर्म, प्रजाति, लिंग, रंग, आवास आदि के आधार पर भेदभाव और छूआछूत को कानूनी रूप से समाप्त कर देने के कारण लोगों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका

भारतीय शिक्षा आयोग के अनुसार आधुनिकीरण की प्रक्रिया का सबसे शक्तिशाली साधन विज्ञान तथा शिल्प विज्ञान पर आधारित शिक्षा है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका इस प्रकार है

1. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of scientific Attitude):** शिक्षा व्यक्तियों के दृष्टिकोण को वैज्ञानिक बनाती है जिससे वे तर्क की कसौटी पर कसे बिना किसी भी तथ्य में विश्वास नहीं करते।
2. **नवीनतम जानकारी प्रदान करना (To Provide Latest Information):** शिक्षा विभिन्न क्षेत्रों में सम्बन्धित नवीनतम जानकारी से हमें अवगत कराती हैं जिससे उसमें से हम अपने लिए आवश्यक बातों का चयन कर सकें।
3. **व्यापक दृष्टिकोण का विकास (Development of Broader Attitude):** लोगों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाए बिना आधुनिकीकरण सम्भव ही नहीं है। शिक्षा ही इसे व्यापक बनाती है।
4. **कुशल नेतृत्व का विकास (Development of Efficient Leadrship):** कोई भी समाज आधुनिकीकरण की ओर तभी बढ़ सकता है जब उसके पास लोगों का मार्गदर्शन करने वाला कुशल नेतृत्व हो। शिक्षा व्यक्तियों में नेतृत्व के गुणों का विकास करती है जिससे वे लोगों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत कर सकें।
5. **विशेषज्ञ तैयार करना (To Prepare Specialists):** शिक्षा, कृषि, चिकित्सा, उद्योग तथा प्रबन्धन आदि क्षेत्रों में ऐसे विशेषज्ञ तैयार करने का कार्य करती है जो समाज को अपने–अपने क्षेत्र में आधुनिक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सके।
6. **सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण** (Preservation of Cultural Values)**:** आधुनिकीकरण का अभिप्राय यह नहीं है कि हम अपने परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों को भूल जाएँ। शिक्षा ही वह साधन है जो आधुनिकीकरण के साथ–साथ हमें अपने इन पुराने मूल्यों से जोड़े रखती है जिससे हमारी अपनी अलग पहचान बनी रहे।

निष्कर्ष

प्रत्येक विकासोन्मुख देश में यह देखने में आता है कि सामान्य शिक्षा (General Education) तथा तकनीकी शिक्षा (Technical Education) के पक्ष के विचारकों में यह विवाद देखने में आता है– सामान्य शिक्षा के पक्ष के विचारक यह कहते हैं कि सामान्य शिक्षा का प्रसार होने से आधुनिकीकरण का अधिक विस्तार और ऊँचे किस्म का होगा, जबकि तकनीकी शिक्षा के समर्थक कहते हैं कि पुस्तकीय शिक्षा या सामान्य शिक्षा बेकार है, उसके स्थान पर तकनीकी शिक्षा का विकास करने से ही देश का आधुनिकीकरण होगा। भारत में अब तक सामान्य शिक्षा/ उच्च शिक्षा पर अधिक जोर दिया गया है, जिसके कारण तकनीकी शिक्षा पिछड़ी है, अब हाल के ही वर्षों में तकनीकी शिक्षा की ओर अधिक बल दिया जा रहा है। यदि आरम्भ से ही तकनीकी शिक्षा पर भी सामान्य शिक्षा के समान ही पाठशालीय स्तर व उच्च शिक्षा के स्तर पर महत्त्वपूर्ण बल दिया गया होता तो आज भारत में आधुनिकीकरण कहीं पहले और कहीं व्यापक हुआ होता। भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों और उसकी सभी व्यवस्थाओं और उसके सभी पक्षों व कार्यक्रम में सुधार व नवीनीकरण (Innovation) लाना आवश्यक है। शिक्षा के आयोजकों, प्रशासकों और सभी शिक्षकों को यह महसूस करना अत्यावश्यक है कि यदि भारत को एक विशाल आधुनिक प्रजातन्त्रीय राष्ट्र के अनुसार उभरकर खड़े होना है तथा आधुनिक विश्व की चुनौतियों का सामना करने में समर्थ होना है तो शिक्षा को सशक्त आधुनिकीकरण का अभिकर्त्ता बनाना होगा। जिससे शिक्षा राष्ट्र के आधुनिकीकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान करने में समर्थ सिद्ध हो सके।

सन्दर्भ

1. पचौरी, गिरीश (2006), शिक्षा के सामाजिक आधार, आर0 लाल0 बुक डिपो

2. पाठक, पी0डी0 (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, विकास की अवस्थाएँ, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन्स,
3. पाठक, पी0डी0 (2012), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. पाठक, पी0डी0 (2020), बाल्यावस्था एवं बड़ा होना, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
5. रुहेला, एस. पी. (2005), विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
6. सक्सेना, एन0 आर0 स्वरूप, (2010) शिक्षा क दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर0 लाल0 बुक डिपा